आलोचन दृष्टि
आजाद नगर, बिन्दकी, जनपद–फतेहपुर,
उ0प्र0–212635
ई–मेल : aalochan.p@gmail.com

आलोचन दृष्टि Year - 06 Volume - 25-III December, 2021 ISSN : 2455-4219

ISSN : 2455-42
(UGC-Care List

आलोचन दृष्टि
Aalochan Drishti

An International Peer Reviewed Refereed
Research Journal of Humanities

Year: 06 Volume: 25 - III December, 2021

A Special Issue

Chief-Editor
Dr. Sunil Kumar Manas

Editor
Dr. Yogesh Kumar Tiwari

Managing Editor
Shri Sudheer Kumar Tiwari

ISSN : 2455-4219
(UGC-Care Listed)

आलोचन दृष्टि

Aalochan Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal of Humanities

A Special Issue

Year - 06 **Volume : 25-III** **December, 2021**

प्रधान-संपादक
डॉ० सुनील कुमार मानस

संपादक
डॉ० योगेश कुमार तिवारी

प्रबंध-संपादक
श्री सुधीर कुमार तिवारी

© **प्रकाशक :**
संपादकीय/प्रकाशकीय पता :–
सृजनश्री न्यास
आजाद नगर, बिन्दकी, जनपद–फतेहपुर,
उ0प्र0–212635
ई–मेल : aalochan.p@gmail.com

मुद्रण :– जय ग्राफिक्स एण्ड कान्सट्रक्सन,
आई0टी0आई0 रोड़, फतेहपुर–212601।

सदस्यता शुल्क	एक अंक	वार्षिक	आजीवन
व्यक्तिगत	300	1200	10,000
संस्थागत	400	1500	15,000

38.	**The Study of Market Centres and Human Population inSolapur District** *Shri. Bansode S. A. & Dr. Lokhande T. N.*	146-150
39.	समेकित बालविकास सेवा योजना - शाश्वत और समावेशी विकास का साधन *प्रा. मोरेश्वर बि. शेंडे*	151-153
40.	हिन्दी उपन्यास 'गबन' विविध आयाम *सतीश दत्तात्रय पाटील*	154-156
41.	जनसंख्या के विकास से भूमि और कृषि का बदलता स्वरूप डेहरी अनुमण्डल के संदर्भ में *वैभव कुमार नीरज*	157-161
42.	अग्निलीक नाटक में चित्रित नारी चेतना *लैफ्टीनेंट डॉ. रविंद्र पाटील*	162-164
43.	झारखंड आंदोलन में विनोद बिहारी महतो का संघर्ष *स्मिता तिग्गा*	165-168
44.	कम्प्यूटर का शिक्षा में उपयोग *बृजेश सिंह*	169-171
45.	मुगलकालीन भारत में कृषक वर्ग *संजय कुमार*	172-175
46.	झारखंड में यूरेनियम उद्योग और विस्थापन *आलोक कुमार*	176-178
47.	टाटा आयरन एवं स्टील कम्पनी का शिक्षा के क्षेत्र में योगदान *कविता*	179-181
48.	प्राचीन एवं वर्तमान भारतीय समाज में पतिव्रत धर्म (एक दार्शनिक विश्लेषण) *डॉ. रीतु कुमारी*	182-185
49.	उपभोक्तावादी संस्कृति के चंगुल में पडे पात्र (हिन्दी उपन्यासों के विशेष संदर्भ में) *डॉ.जिन्सी जोसफ*	186-188
50.	न्याय दर्शन के विशेष परिप्रेक्ष्य में शब्द प्रमाण की अवधारणा *डॉ. शिवशंकर प्रसाद*	189-191
51.	हिन्दी पत्रकारिता और सामाजिक चेतना *डॉ. कुंजन कुमार*	192-194

अग्निलीक नाटक में चित्रित नारी चेतना

लैफ्टीनेंट डॉ. रविंद्र पाटील *

अग्निलीक हिंदी के अग्रणी नाटककार भारतभूषण अग्रवाल का अप्रतिम नाटक है। इस नाटक में राम को एक महत्वाकांक्षी राजा के रूप में प्रस्तुत किया है। इसके अंतर्गत सीता का विद्रोही रूप प्रस्तुत है। वह राम पर आरोप लगाती है। वह कहती है, रामराज्य में प्रजा का हित भी मात्र प्रचार था, प्रजा का हित उनके लिए सर्वोपरि होता तो उनके राज्य में अकाल क्यों पडता? प्रस्तुत नाटक में ऐसे अनेक प्रसंग प्रस्तुत है। इसके अंतर्गत नारी के अनेक समस्याओं को उद्घाटित किया है। नाटक के आरंभ में ही पुरुष–प्रधान संस्कृति की झलक मिलती है। राम के साथ अनेक समस्याओं का सामना करते हुए चौदह साल तक जंगल में भटकती सीता पर एक व्यक्ति द्वारा आरोप किए जाने पर उस अबला नारी को बेरहमी से दुबारा वन में छोडा दिया जाता है।

नारी का अबला रूप :– बनवास में हर संकट में राम का साथ देनेवाली सीता अशोक वाटिका में संघर्ष करती रहती है। इतना सब कुछ सहकर वह हमेशा राम का साथ देती हुई नजर आती है। अशोक वाटिका में महाबली हनुमान से उसकी भेंट अवश्य होती है परंतु हनुमान सिर्फ राम का भक्त (सेवक) ही नजर आता है। हनुमान अगर चाहता तो आसानी से सीता को उठाकर ले आता। परंतु दुर्भाग्य की बात यह है कि इतना सब कुछ होने के बावजुद भी सीता यह सब चुपचाप सहती रहती है। इस घटना के बारे में वाल्मीकि मुनि से बताते हुए कहती है, "स्वामी ने मुझे केवल समाचार लाने भेजा है,

उनके आदेश के बिना मैं कुछ नहीं कर सकता!
पर आप चिंता न करें
वे सेना तैयार कर रहें हैं
लंका पर चढ़ाई होगी
रावण का समूल नाश किया जाएगा
और तब राम विजयश्री के साथ आपसे मिलेंगे।"[1]

यहाँ सीता के माध्यम से नाटककार ने नारी के अबला रूप को प्रस्तुत किया है। राम के बनवास निकलते समय सीता की सास ने उसे रोका जरूर परंतु वह राम को छोडकर नहीं रुकी क्योंकि वह अपना सबकुछ राम को मानती थी। वनवास के समय पग–पग में पडे काँटो का सामना करते हुए, नदियाँ दुर्गम पहाड, उबड खाबड घाटियों को हँस–हँसकर पार करने में धन्यता मानती थी। राम की थकान को माथे लगाती थी। परंतु राम उसे उसका धर्म मानता था। राम का पुरा ध्यान अयोध्या की ओर था। वह सीता की ओर नजर अंदाज करता रहा। रावण द्वारा सीता को भगा ले जाने के बाद राम वानर सेना के साथ लंका पहुँचे। जब राम ने रावण को मारकर लंका पर विजय प्राप्त किया। तब हनुमान सीता को लेकर राम के पास पहुँचा। रामने सीता को गले नहीं लगाया बल्कि प्रजा के किसी एक सदस्य द्वारा उठाएँ सवाल पर विश्वास करते हुए सीता को अग्नि को साक्षी बनाकर वचन देने के लिए कहा। इतना कुछ होने के बावजुद भी सीता को गर्भावस्था में वन में छोडा गया। यह राक्षसी काम की जिम्मेदारी लक्ष्मण पर सौंपी गयी। सीता माता को वन में छोडकर जाते समय सीता लक्ष्मण से कहती है,

"तब हम पति–पत्नी थे,
हमारा धर्म एक था।
अब वे महाराज है,
और मैं उनकी प्रजा हूँ
इसलिए यह बात उचित नहीं होगी
तुम बस इतना ही कह देना
'आज्ञा' शिरोधार्थ है।"[2]

इतना सबकुछ घटित होने के बावजुद श्री रामप्रिय अयोध्या की जनता सीता माता को वन में छोडने के निर्णय का विरोध नहीं करती। अतः एक राजकुमारी होकर भी जनकपुत्री सीता को गर्भावस्था में बनवास जाना पडता है।

*** अध्यक्ष, हिंदी विभाग, राजर्षि छत्रपति शाहू कॉलेज, कोल्हापुर, महाराष्ट्र ४१६००३।**

मानसिक द्वंद्व :– विवेच्य नाटक में नाटककार ने सीता के मानसिक द्वंद्व का चित्रण अत्यंत सुंदर ढंग से किया है। अयोध्या नगरी के किसी एक नागरिक द्वारा किए अरोप का पालन करते हुए निष्पाप अबला सीता को गर्भावस्था में ही वन में छोडने का कठोर आदेश देते हैं। परिणामतः राम के हर सुखःदुख में साथ देनेवाली सीता इस आहत से बिल्कुल सुधर नहीं पाती। गुरुदेव वाल्मीकि के आश्रम में सीता को यही बात बार–बार सताती रहती है। वह टूट जाती है। परिणामतः वह कमजोर हो जाती है। वह बार–बार चेत होने लगती है। तभी राम अश्वमेध यज्ञ का आयोजन करते हैं। राम की सेना विश्व विजय के लिए निकल पडती है। राम के इस अभियान को लेकर सीता के मन में द्वंद्वं शुरू हो जाती है। इस प्रसंग का चित्रण करते हुए नाटककार लिखते हैं,

"कि तुम अश्वमेध के नाम पर
पाप कर रहे हो?
क्या तुम्हारा यह अटल प्रण है
कि तुम कभी सही समय पर सही काम न करोगे?
या क्या सचमुच हम सब
किसी अंध नियति के हाथ की कटपुतलियाँ हैं
और अपनी गति पर हमारा कोई वश नहीं है?
रुककर
पर मैं क्यों कलश पाती हूँ?
कौन है वे मेरे
और मै ही उनकी कौन हूँ?
क्या मोल है मेरी इस चिंता का?"[3]

यहाँ नाटककार ने सीता के मानसिक द्वंद्वं का चित्रण अत्यंत सुंदर ढंग से किया है। सीता एक ओर अश्वमेध यज्ञ के बारे में सोचती हैं। वही दूसरी ओर वह अपने आप से कहती कि कौन है वे मेरे?

विद्रोह की भावना :– विवेच्य नाटक के तीसरे दृश्य का आरंभ वाल्मीकि के आश्रम से होता है। रात के आखरी पहर में वाल्मीकि चिंतीत नजर आते हैं। अचानक सीता सपने से चौंककर उठती है। वाल्मीकि सीता के पास आकर पुछते हैं कि देवी तुमने कोई सपना तो नहीं देखा? इसका उत्तर देते हुए सीता कहती है, मैं आज तक सपना ही देखती थी। परंतु आज मुझे चेत हुआ है। इस सपने से सीता के मन में विद्रोह की भावना जागृत होती है। सीता द्वारा राम पर अरोप लगाने पर गुरुदेव वाल्मीकि सीता को नारीत्व के गुणों की याद दिलाते है। इसका खंडन करते हुए सीता कहती है–

"शोभा, शोभा?
हाँ, नारी तो शोभा ही है
उससे तो शोभा ही माँगी जाती है
गुरुदेव,
क्या इस रामराज्य में सत्य का कोई स्थान नहीं
सब कुछ शोभा के ही लिए है?
और उस शोभा का सारा भार
एक नारी के ही ऊपर है?
कब तक,
कहाँ तक
मैं इस शोभा का बोझ ढोऊँ।"[4]

यहाँ नारी विमर्श की भावना स्पष्ट होती है। अनादिकाल से भारतीय नारी पर अनेक अन्याय एवं अत्याचार हो रहे है। जब किसी नारी द्वारा इसका विरोध किया जाता है तो उसे नारीत्व की याद दिलाई जाती है। हजार संकटोंका सामना करने सहने के बाद सीता जब राम पर आरोप करती है तो गुरुदेव वाल्मीकि भी उसे नारीत्व की याद दिलाते नजर आते हैं। परंतु सीता नीडर होकर इस बात का खंडन करती हुई नजर आती है। नाटक के अन्य एक प्रसंग में राम जब लव–कुश को अयोध्या ले जाने का संकल्प करते हैं तब सीता के मुख से निम्न बाते उद्घाटित होता है–

"मैं उनकी माँ
इस आश्रम में टहलनी बनकर रही हूँ

तो क्या इसलिए
कि उनके बडे हो जाने पर एक दिन
महाराज आकर उन्हें ले जाए
और मुझे उनकी सेवा का प्रतिदान दें
और कहेः चलो, तुम्हारा विचार होगा?
मुझे अपना विचार ही करना होता तो तभी क्या बिगड़ा था
जब दुर्मुख ने महाराज के कान भरे थे?
तब भी तो मैं
प्रजा जनों के सामने हाथ जोडकर कह सकती थी
भाइयों, मैं सच कहती हूँ
मैं निष्कलंक हूँ
मैंने अपने पति के अतिरिक्त
कभी किसी पुरुष को नहीं जाना है।
नहीं गुरुदेव
यह अपमान तो उस परित्याग से भी भयंकर है।"[5]

यहाँ सीता स्वंय पर गुजरे प्रसंगों को नहीं भूली है। वह गुरुदेव और राम के विचारों का स्पष्ट रूप से खंडन करती हुई नजर आती है।

साम्राज्य विस्तारवादी लिप्सा :– विवेच्य नाटक में राम को साम्राज्यविस्तारवादी राजा के रूप प्रस्तुत किया गया है। राम के साथ बनवास में हर संकट में संघर्ष करती चौदह साल बनवास बितानेवाली सीता का राम ने कभी विचार नहीं किया, बल्कि वे सदा रघुवंश में अपनी कीर्ति सबसे ऊँची करने की लालसा रखते नजर आते हैं। वे सदा राज्य की सीमाओं को बढाते दिखाई देते है। दिग्विजय के उद्देश्य से उन्होंने अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया। राम की सेना चारों ओर राज्य की सीमाओं को बढाने के लिए निकल पडी। परंतु राजा राम ने प्रजा का कोई हित नहीं किया उनके ही राज्य में अकाल पडा। चारों ओर महामारी फैली। पुरे राज्य में त्राहि–त्राहि बन गयी। नाटक के एक प्रसंग में सीता और वाल्मीकि के बीच हुई वार्तालाप से राम के साम्राज्य विस्तारवादी लिप्सा का चित्र स्पष्ट होता है– "महत्त्वाकांक्षा/आसागरा धरा को अपनी बाहो में भर लेने की इच्छा, रघुवंश में अपनी कीर्ति सबसे ऊँची करने की लालसा जिसके आगे सारे नेह–नाते/सारे जीवन–सुख/सारी धर्म प्रतिज्ञाएँ/इन्हें थोथी जान पडती हैं।/कहने को ये.../ये सदा पैनी दृष्टि रखते हैं।"[6]

निष्कर्ष :– प्रस्तुत नाटक अपने आप में एक विशेष महत्व रखता है। जैसे वाल्मीकि कृत रामायण में राम को नायक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। साथ ही सारी दुनिया के सामने रामराज की संकल्पना रखा है। प्रस्तुत नाटक में भारतभूषण अग्रवाल ने राम को एक महत्त्वाकांक्षी राजपुत्र के रूप में प्रस्तुत किया है। किसी भी हालात एवं कुछ भी करके समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करना और साम्राज्यविस्तार करना उनका प्रमुख उद्देश्य था। परंतु राम के हर सुख दुःख में साथ देनेवाली सीता को अपने जीवन में कोई स्थान नहीं देना उसके चरित्र को लेकर शक करना। साथ ही राम पर सीता द्वारा आरोप करना आदि इस काव्य–नाटिका मूलस्वर है।

संदर्भ सूची :–

1. अग्निलीक, भारतभूषण अग्रवाल, राजकलम प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९७६, पृष्ठ, ४७।
2. वही, पृष्ठ, १४।
3. वही, पृष्ठ, ३०–३१।
4. वही,, पृष्ठ, ३९।
5. वही, पृष्ठ, ४१।
6. वही,, पृष्ठ, ५०,५१.